GANDHIAN IDEOLOGY-2

FOR:P.G.SEM-3,CC-13,UNIT-2

BY:ARUN KUMAR RAI
ASST.PROFESSOR
P.G.DEPT.OF HISTORY
MAHARAJA COLLEGE
ARA.

विचारधारा

- गांधीजी के जन आंदोलन का सैद्धांतिक आधार ***सत्य*** और ***अहिंसा*** पर आधारित है। सत्य और अहिंसा का अटूट संबंध ***सत्याग्रह*** के विचार को जन्म देता है
- गांधी जी सत्य के पुजारी थे। उनका विश्वास था कि ***सत्य ईश्वर है और ईश्वर सत्य है।*** गांधी जी सत्य के संदर्भ में कहते हैं कि ***तुम्हारी जो अंतरात्मा कहती है वही सत्य है ।***उन्होंने इसके लिए मन ,वचन और कर्म में पवित्रता का आचरण करने को कहा। गांधीजी की सत्यता ***हिंदू धर्म*** से प्रभावित दिखती है जिसमें यह कहा गया है ***सत्य से बड़ा कोई धर्म नहीं है।***

अहिंसा

- उनकी पुस्तक ***My Experiment With Truth*** न केवल उनकी आत्मकथा है बल्कि सत्य का एक सफल प्रयोग भी है।
- अहिंसा गांधी जी के सत्याग्रह का मूल आधार था। वे अहिंसा को मानव का प्राकृतिक गुण मानते थे ।उनका विचार था कि मनुष्य स्वभाव से अहिंसा प्रिय होता है तथा वह परिस्थिति वश ही हिंसक बनता है। **9 मार्च 1930** के ***यंग इंडिया*** के एक अंक में गांधी जी ने लिखा था -पूर्ण अहिंसा सभी प्राणियों के प्रति दुर्भावना के अभाव का नाम है। गांधी जी का कहना था जब कोई व्यक्ति अहिंसात्मक होने का दावा करता है तो उससे यह अपेक्षा

अहिंसा

की जाती है कि जिसने उसको हानि पहुंचाई है उससे वह गुस्सा भी नहीं होगा ।वह उसके बुरे की कामना भी नहीं करेगा। वह उसकी अच्छाई चाहेगा और वह उसको किसी प्रकार का शारीरिक कष्ट भी नहीं देगा।

- गांधीजी अन्यत्र कहते हैं अहिंसा का तात्पर्य अत्याचारी के प्रति नम्रता पूर्वक समर्पण नहीं है बरन इसका तात्पर्य अत्याचारी की स्वेच्छा चारिता का आत्मिक बल के आधार पर प्रतिरोध करना है।

अहिंसा

- यह अहिंसा निर्बल व्यक्ति का अस्त्र नहीं है बल्कि शक्तिशाली का अस्त्र है ।विरोधी की शक्ति से डरकर या अपनी विवशता अनुभव करते हुए उसका प्रतिकार न करना अहिंसा नहीं है वह तो कायरता है। अहिंसा स्वयं एक शक्ति है जिससे विरोधी के हृदय पर विजय प्राप्त की जाती है ।यह भौतिक शक्ति को आध्यात्मिक शक्ति के आगे झुकाने की कला है गांधीवादी अहिंसा की यह पद्धति तत्कालीन समय में व्यापारिक वर्ग , कृषकों स्थानीय लोगों को आकर्षित कर रही थी।

सत्याग्रह

- ***सत्याग्रह*** गांधीजी के विचार धारा का मूल तत्व है। सत्याग्रह का अर्थ है ***सत्य +आग्रह***, अर्थात ***सत्य पर अड़े रहना।*** सत्य के मार्ग से कभी ना हटना चाहे जितनी भी बाधाएं व यातनाएं क्यों न सहन करनी पड़े।वास्तव में अहिंसा के माध्यम से असत्य पर आधारित बुराई का विरोध करना ही सत्याग्रह है। सत्याग्रही को स्वयं सत्य पर अड़िग रहकर अपने विरोधी को यह महसूस करवाना है कि उसका मार्ग असत्य एवं बुराई का मार्ग है।

सत्याग्रह

- एक सत्याग्रही अपने प्रतिद्वंदी से आध्यात्मिक संबंध स्थापित कर लेता है। वह उसमें ऐसा विश्वास उत्पन्न कर देता है कि वह बिना अपने को नुकसान पहुंचाए उनको नुकसान नहीं पहुंचा सकता ।अतः सत्याग्रह ***सत्य की विजय हेतु किए जाने वाले आध्यात्मिक और नैतिक संघर्ष का नाम है।***
- सत्याग्रही सत्य के मार्ग पर दृढ़ होकर अपने विरोधी का हृदय परिवर्तन करने को तत्पर होता है। सत्याग्रही को अहिंसक बने रहना है किंतु विरोध बराबर जारी रखना चाहिए।

सत्याग्रह

- सत्याग्रही को कतिपय साधनों का प्रयोग करना पड़ता है। यह साधन हैं -हड़ताल ,असहयोग ,सविनय अवज्ञा, धरना ,बहिष्कार आदि।
- कई बार सत्याग्रह को ***निष्क्रिय प्रतिरोध(Passive Resistance)*** का पर्यायवाची मान लिया जाता है किंतु सत्याग्रह ,निष्क्रिय प्रतिरोध नहीं है। यद्यपि यह दोनों, आक्रमणों का सामना करने ,संघर्षों को दूर करने तथा सामाजिक एवं राजनीतिक परिवर्तन लाने की पद्धतियां हैं लेकिन इनमें मौलिक अंतर है।

सत्याग्रह एवं निष्क्रिय प्रतिरोध में अंतर

- निष्क्रिय प्रतिरोध एक कमजोर व्यक्ति का अस्त्र है जिसमें की हिंसा और शारीरिक शक्ति का प्रयोग अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया जाता है जबकि सत्याग्रह शक्तिशाली व्यक्ति का अस्त्र है और उसमें किसी भी प्रकार की हिंसा प्रयोग नहीं होता है।
- निष्क्रिय प्रतिरोध में शत्रु को परेशान करने की भावना पर बल दिया जाता है किंतु सत्याग्रह में स्वयं ही सत्याग्रही अधिकतम कष्ट झेलता है।इसमें शत्रु के प्रति दुर्भावना के लिए कोई स्थान नहीं होता।

सत्याग्रह एंव निष्क्रिय प्रतिरोध में अंतर

- निष्क्रिय प्रतिरोध द्वेष, घृणा और अविश्वास पर आधारित है जबकि सत्याग्रह प्रेममूलक है।
- निष्क्रिय प्रतिरोध में विरोधी को हराने का विचार हावी होता है जबकि सत्याग्रह में हृदय परिवर्तन पर जोर होता है
- निष्क्रिय प्रतिरोध में रचनात्मक प्रवृत्ति का कार्य करने के लिए कोई स्थान नहीं होता जबकि सत्याग्रह में रचनात्मक कार्यक्रम को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता है।

साधन साध्य की पवित्रता

- गांधीजी ने राजनीति और नैतिकता के निकट संबंध को स्पष्ट करने के लिए साधन और साध्य दोनों की पवित्रता पर बल दिया जबकि मैकियावेली ने सिर्फ साध्य की पवित्रता पर बल दिया था। गांधी जी ने साधन को साध्य से पहले रखा ।उनका कहना था कि जैसे साधन होंगे वैसा ही साध्य होगा बिल्कुल वैसा ही जैसे बीज के अनुरूप वृक्ष की प्रकृति होती है। यदि साधन अनैतिक होंगे साध्य चाहे कितना भी नैतिक क्यों ना हो वह इसे निश्चय ही भ्रष्ट कर देगा।

साधन साध्य की पवित्रता

- स्वराज प्राप्ति हेतु सत्याग्रह एक ऐसा साधन था जो साध्य अर्थात स्वराज के समान ही पवित्र था।यदि हिंसा,छल कपट और असत्य के मार्ग पर चलकर स्वराज मिल भी जाए तो वे उसे स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे। यही वजह है कि 1922 में चोरा -चोरी कांड होने के कारण असहयोग आंदोलन वापस ले लिया गया था।

वर्ग- समन्वय

- ***वर्ग -समन्वय*** पर गांधी जी ने विशेष बल दिया । इस वर्ग-समन्वय के द्वारा स्वतंत्रता प्राप्ति का लक्ष्य निर्धारित किया जबकि मार्क्सवादी अवधारणा में वर्ग संघर्ष को अनिवार्य माना गया है।

अनशन

- सत्याग्रह का एक अन्य रुप ***अनशन*** है ।गांधी जी इसे अत्यधिक उग्र रूप समझते थे और उनका विचार था कि इसे अपनाने में अत्यधिक सावधानी बरतनी चाहिए ।अनशन केवल कुछ विशेष अवसरों पर आत्म शुद्धि या अत्याचारियों के हृदय परिवर्तन के लिए किया जाना चाहिए।

हड़ताल

- सत्याग्रह का एक अन्य रुप ***हड़ताल*** है। इस संबंध में गांधीजी का विचार साम्यवादियों से भिन्न है।गांधीजी कार्ल मार्क्स के वर्ग संघर्ष की धारना में विश्वास **नहीं** करते थे और उनके अनुसार हड़ताल आत्म-शुद्धि के लिए किया जाने वाले स्वैच्छिक प्रश्न है जिसका लक्ष्य स्वयं कष्ट सहते हुए विरोधियों का हृदय परिवर्तन करना है। उनके अनुसार हड़ताल करने वाले व्यक्तियों की मांगे नितांत स्पष्ट और उचित होना चाहिए।

सर्वोदय

- गांधीजी की राजनीतिक धारणाओं का मूलाधार ***सर्वोदय*** था।सर्वोदय का अर्थ है -***सबकी समान उन्नति*** ।एक व्यक्ति का भी उतना ही महत्व है जितना अन्य व्यक्तियों का सामूहिक रूप से ।गांधी जी का सर्वोदय का यह सिद्धांत बेंथम, मिल के उस उपयोगितावादी सिद्धांत के विपरीत था जिसके अनुसार-'अधिकतम लोगों का अधिकतम सुख' कहा गया।

धर्म

- गांधीजी के लिए धर्म किसी एक विशेष धार्मिक समुदाय की सैद्धांतिक व्याख्या ना होकर समस्त धर्मों में निहित मूलभूत सत्य हो सकता है। गांधी जी ने धर्म की व्याख्या सच्चाई के लिए संघर्ष के रूप की। वे यह मानते थे कि धर्म को किसी व्यक्ति की निजी राय बताकर पीछे नहीं धकेला जा सकता क्योंकि धर्म व्यक्तियों की समस्त गतिविधियों को प्रभावित करता है

स्वदेशी

- गांधी जी ने ***स्वदेशी*** का प्रचार किया। स्वदेशी से अभिप्राय अपने देश में बनी हुई वस्तुओं के प्रयोग से था, उदाहरण स्वरुप खादी का इस्तेमाल करना ।उनकी राय में स्वदेशी के दवारा किसान अपनी गरीबी को हटा सकताथा। वे कताई करके अपनी आय में वृदधि कर सकते थे। विदेशी कपड़ों के इस्तेमाल में कमी करके भारत से इंग्लैंड को हो रहे धन की निकासी को भी रोका जा सकता था।

To be continued.....